॥श्री॥

गरुडगमन तव चरणकमलमिह
मनसि लसतु मम नित्यम्
मनसि लसतु मम नित्यम्॥
मम तापमपाकुरु देव
मम पापमपाकुरु देव॥
जलजनयन विधिनमुचिहरणमुख
विबुध विनुत पदपद्म ---2
मम तापमपाकुरु देव ------------- ॥१॥
भुजगशयन भव मदनजनक मम
जननमरण भयहारि ---2
मम तापमपाकुरु देव ------------- ॥२॥
शंखचक्रधर दुष्टदैत्यहर
सर्वलोक - शरण ---2
मम तापमपाकुरु देव ------------- ॥३॥
अगणित गुणगण अशरण शरणद
विदलित सुररिपुजाल ---2
मम तापमपाकुरु देव ------------- ॥४॥
भक्तवर्यमिह भूरिकरुणया
पाहि भारतीतीर्थम् ---2
मम तापमपाकुरु देव ------------- ॥५॥

© www.madhaveeraghuveer.com